ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्   विषय- पाठ्य सहगामी क्रिया

दिनांक—24/07/2020

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं

केवल इतना हो (करुणामय)

कभी न विपदा में पाऊँ भय।

दुख ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही

पर इतना होवे (करुणामय)

दुख को मैं कर सकूँ सदा जय। (आत्मत्राण— रवीन्द्रनाथ टैगोर)

इस प्रार्थना में कवि ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए यह कहा है कि ऐसा नहीं हो कि मेरे समक्ष विपदायें आएँ ही नहीं, मुझे दुख नहीं मिले । दुख भी मिले आपदाएं भी आए परंतु उन सबों से हम में इतनी क्षमता दे देना कि मैं लड़ सकूं उन सबों से । आपदाओं विपदाओं को तो आना ही है । ये तो प्रकृति के नियमों में हैं ही। प्रकृति के नियम को हम बदल नहीं सकते हैं परंतु प्रकृति के नियम के अनुसार अपने आप को मजबूत अवश्य बना सकते हैं ।

छात्रों! आज आपकी सी.सी.ए. कक्षा है। आप की जांच परीक्षा को मद्देनजर रखते हुए आप अपने पाठ्यपुस्तक एवं और व्याकरण के निर्देशित पाठों का अध्ययन अवश्य करें। उससे प्रश्न स्वयं निर्मित करें और उसका उत्तर यदि

संभव नहीं हो तो हिंदी शिक्षकों के समक्ष अवश्य प्रस्तुत करें।

धन्यवाद

अपने मजबूत इरादों के साथ अपने आप को मजबूत रखें